पवनसुत पदावली

ॐ

जय श्रीराम

रचना एवं संकलन

नव्य शर्मा

॥ दोहा १ ॥

जय बजरंगी महाबली ।
अंजनीसुत नररूप ॥
जहाँ राम वहाँ तुम सदा ।
कृपा करें अनूप ॥१॥

॥ दोहा २ ॥

मन मंदिर में ज्योति जले ।
प्रेम से मन बहलाए ॥
राम नाम से विश्व चले ।
हर दुख कष्ट बहाए ॥॥

॥ १ ॥

जय हनुमान संत हितकारी ।
हमें सुन लीजिए प्रभु उपकारी ॥
अंजनी पुत्र संकट हरता ।
तुमसे प्रेम कौन न करता ॥ १ ॥

॥ २ ॥

निष्ठावान गुणी रुद्र अवतारा ।
शरणागतों के दुख निवारा ॥
अंजनेय अत्यंत बलवान ।
हमें स्वीकारें श्री हनुमान ॥ २ ॥

॥ ३ ॥

तुमसे बड़ा भक्त नहीं है ।
अतिवीर केसरीनंदन की जय ॥
तुम ही राम वचन के पालक ।
पवन तनय सबके उद्धारक ॥ ॥

॥ ४ ॥

जय जय जय श्री धन्वंतरी ।
आप हटाते हर अंधियारी ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
जग में तुम सम नहीं कोई भ्राता ॥ ॥

॥ ५ ॥

संकटमोचन है नाम तुम्हारा ।
आपके सिवा न कोई सहारा ॥
शक्ति भक्ति और सिद्धि के दाता ।
आपकी पुकार पर कौन न आता ॥५॥

॥ ६ ॥

नाम आपका है संकटमोचक ।
पीड़ा पर भी रहें प्रतिबोधक ॥
सिया राम के तुम रखवारे ।
सब निर्बलों के तुम ही सहारे ॥६॥

॥ ७ ॥

तुम राम के शाश्वत साथी ।
संकट बीच तुम्हारी याद आती ॥
कर्म योग और राम के ज्ञाता ।
आपका भक्त प्रभु को पाता ॥।॥

॥ ८ ॥

जय गुरुदेव ज्ञान के सागर ।
सदा रहें वह सूक्ष्म व जागर ॥
महावीर अतिसक्षम प्रतिहारी ।
बुद्धिहीन पर कृपा तुम्हारी ॥।॥

॥ ९ ॥

तुम्हारे चरणों में त्रिभुवन ।
तुम्हीं से गतिमान है पवन ॥
तुम्हारे गुण हर युग है गाता ।
विजयी रहो हे भीम के भ्राता ॥॥

॥ १० ॥

सम्मान व आदर तुम्हारी निशानी ।
आपकी कथाएँ किसने न जानी ॥
गरिमा को आपने बचाया ।
लंका को अग्नि से मिलवाया ॥॥

॥ ११ ॥

आप-सी विनम्रता जग ने न देखी ।
संतों की वाणी भी लेखी ॥
लक्ष्मण पर जब संकट छाया ।
संजीवनी ला जीवन लौटाया ॥॥

॥ १२ ॥

आपके वचन कष्ट मिटाएँ ।
अग्नि जैसे पवित्र कर पाएँ ॥
हृदय चीर कर जग को दिखाया ।
राम-सिया को उसमें पाया ॥॥

॥ १३ ॥

राम नाम जपे जो भी ।
वही आपके ज्ञान का लोभी ॥
भक्त जो भजन आपके गाए ।
राम नाम के दर्शन पाए ॥ ॥

॥ १४ ॥

जय हनुमान, निश्चय के दाता ।
जो कोई भी आपके गुण गाता ॥
सुख शांति उसके घर आती ।
जिसके मन में माँ सिया समाती ॥ ॥

॥ १५ ॥

जो भी प्रेम के फूल चढ़ाता ।
आपका हृदय उसको अपनाता ॥
हनुमान जाप करे जो भी ।
सदा रहें रघुप्रेम का भोगी ॥ ॥

॥ १६ ॥

तुम्हारे लिए भजन जो गाते ।
नम्र हृदय वही अपनाते ॥
प्राण हृदय पर जब संकट आए ।
पीड़ा से हनुमान छुड़ाए ॥ ॥

॥ १७ ॥

हमें विश्व का ज्ञान नहीं है ।
मन में हमारे द्वेष ही है ॥
एकजुट होकर भी हैं बिखरे ।
हमारे नीलकंठ ही निकले ॥॥

॥ १८ ॥

हमें है सहस्र वर्ष की पीड़ा ।
हमें दिखाएँ हनुमत बलवीरा ॥
मानव प्रतीक्षा में नयन बिछाए ।
आपकी आशा में दीप जलाए ॥॥

॥ १९ ॥

जिनके दिल अभिमान से भारी ।
उनके दिल कभी न सुखकारी ॥
जाएँ रोग हटे सब पीड़ा ।
जीव से निकले बस नीरा ॥ ॥

॥ २० ॥

हृदय में शत्रुओं को कैसे पहचानूँ ।
इस रहस्य को प्रभु मैं न जानूँ ॥
दिल से घृणा कैसे हटाई ।
मन में एकता कैसे लाई ॥ ॥

॥ २१ ॥

रक्षा करो विघ्न मिटाओ ।
असली शत्रु का परिचय बताओ ॥
महाप्रभु हमारे दिल से देखें ।
आपके प्रेम से हम भी सीखें ॥॥

॥ २२ ॥

शुद्ध विचार मिलें मनभावन ।
मन व हृदय करें अतिपावन ॥
जय गिरिधर, जय बली बलस्वामी ।
प्रयत्न करें हटाएँ हर ग्लानि ॥॥

॥ २३ ॥

जय महाप्रभु सिद्धि कीजै ।
शक्ति अपने भक्तों को दीजै ॥
हमें दें आप अपने दर्शन ।
हमारे फल आपको अर्पण ॥॥

॥ २४ ॥

जीवन में दें प्रभु हमें श्रद्धा ।
सुख समृद्ध रहे हर वृद्धा ॥
हर चेहरे पर रहे उजियारी ।
रहे ये भूमि युवा को प्यारी ॥॥

॥ २५ ॥

प्रजा भक्तों के तुम रखवारे ।
संकट हरण तुम करो हमारे ॥
जय महावीर हमें सुनाएँ ।
श्रीराम के गुणों को गाएँ ॥॥

॥ २६ ॥

प्रेम समर्पण आपसे सीखें ।
आपके हृदय में रघुपति को देखें ॥
हमारी अंधेरी नगरी में आएँ ।
ज्ञानी प्रकाश से कष्ट मिटाएँ ॥॥

॥ २७ ॥

हम सब की आपमें श्रद्धा ।
हमको दीजिए आपकी विद्या ॥
राम नाम तुमको अति प्यारा ।
सदा जपो तुम मंत्र ये न्यारा ॥॥

॥ २८ ॥

सत्य वचन शुद्धि ही राम हैं ।
अंतरमन का यही धाम है ॥
जिस पथ पर चरण हो तुम्हारा ।
वही बन जाए जीवन हमारा ॥॥

॥ २९ ॥

भक्तिपथ के तुम पथगामी ।
कर दो मन मंदिर अभिरामी ॥
चरणों की रज बन जाए श्वास ।
हृदय बने तुम्हारा निवास ॥॥

॥ ३० ॥

हमारी प्रार्थना गुरुदेव करें स्वीकार ।
आपकी कृपा से जीवन अपार ॥
चरणों में रखे हैं सुमन मनभानी ।
क्षमा करो प्रभु, हर अनजानी ॥॥

॥ दोहा ३ ॥

शरण तुम्हारी मिल जाए ।
संकट मिटे संहार ॥
मन मंदिर में बसे रहो ।
रघुवीर भक्त उजियार ॥॥

ॐ

पवनसुत पदावली

रचना एवं संकलन — नव्य शर्मा

प्रथम संस्करण, २०२५